जयपुर में भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में आज उन सभी कैंसर विजेताओं को बधाई देता हूं, जो कैंसर की चुनौतियों से लड़े, एक लंबी बीमारी से संघर्ष करके लड़े और सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ, बेहतर चिकित्सा सुविधाओं से आज उन्होंने कैंसर पर विजय प्राप्त की है। जब मैं इन छोटे-छोटे बच्चों को देखता हूं, जिनकी जिंदगी अभी शुरू हुई है, जिनके अच्छे दिन आने वाले थे, उस समय उनको कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से संघर्ष करना पड़ा।

श्रीमती अनिला कोठारी जी सही कह रही थीं। कोठारी साहब ने उनको बोलने के लिए मना किया था, लेकिन वे जितने मरीजों से मिलती थीं, उनके संपर्क में रहती थीं और उनके जीवन की वास्तविक कहानियों को समझती थीं। एक मां होने के कारण उनके अंदर संवदेना, पीड़ा, दर्द था कि ऐसे मरीज, जिनकी उम्र कम है, जिनमें से कई मरीज आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं और धन न होने के कारण इलाज नहीं करा पा रहे हैं, हम उनको कैसे बिना इलाज के छोड़ सकते हैं?

उनकी संवेदनाएं, उनकी पीड़ा उन्होंने महसूस की, इसीलिए जब मैं कैंसर हॉस्पिटल में जाता हूं या किसी सुपर स्पेशैलिटी हॉस्पिटल में जाता हूं, तो देखता हूं कि कितने लोगों के पूरे के पूरे परिवार ऐसी गंभीर बीमारियों के कारण तबाह हो जाते हैं।

चाहे गरीब से गरीब व्यक्ति हो, उसके पास जीवन में जो कुछ भी कमाया हुआ है या फिर कर्ज लेकर उसकी यही कोशिश रहती है कि वह अपने बेटे-बेटी, अपनी पत्नी का बेहतर इलाज कराए, ताकि वह उस बीमारी से ठीक हो सके।

सार्वजनिक जीवन में रहते हुए हमने भी इस पीड़ा और दर्द को देखा है। जब यह हॉस्पिटल बना था, तब एक नन्हा सा पौधा लगा था। स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत जी और कोठारी साहब ने विचार किया था कि कैंसर का एक हॉस्पिटल होना चाहिए।

यद्यपि वह छोटा-सा, नन्हा सा पौधा, आज एक वट वृक्ष के रूप में बढ़ा है, लेकिन उतनी ही तेजी से कैंसर की बीमारी भी बढ़ी है। उस समय मरीजों को बीमारियों की जानकारी नहीं थी। उन्हें जानकारी का अभाव रहता था, टेस्ट्स नहीं होते थे, जांचें नहीं होती थीं।

कई बार गाँव में बच्चा और जवान व्यक्ति बैठे-बैठे चला जाता था। उस समय लोगों को कुछ पता नहीं होता था। उनको लगता था कि अभी तो ठीक था, पता नहीं कैसे चला गया। इसका कारण यह है कि उस समय चिकित्सा सुविधाओं का जितना विस्तार होना चाहिए था, उतना विस्तार नहीं हो पाया था।

हमारा देश वर्ष 1947 में आजाद हुआ। आजादी के बाद हमारे सामने बहुत सारी चुनौतियां थीं। हमने संसदीय लोकतंत्र का अपनाया। संसदीय लोकतंत्र में जनप्रतिनिधियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। उस समय हर क्षेत्र में चुनौतियां थीं। उस समय शिक्षा और चिकित्सा का अभाव था। उस समय मौलिक इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं था। सड़कें नहीं थीं, पीने का पानी नहीं था,

अस्पताल नहीं थे और स्कूल नहीं थे। देश की बहुत बड़ी आबादी अशिक्षित थी। इतने बड़े देश के अंदर उन चुनौतियों का समाधान करने में इतना समय लग गया।

इस 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में हम आगे बढ़े हैं। हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, चिकित्सा क्षेत्र हो, इंफ्रास्ट्रक्चर हो, पानी हो, बिजली हो या गरीब व्यक्तियों का नि:शुल्क इलाज हो। शिक्षा के अधिकार कानून के तहत लोगों को शिक्षा मिले, मौलिक शिक्षा मिले। इन सबके लिए बहुत सारे कानून बनें, तभी हम बहुत सारी चुनौतियों का समाधान कर पाए हैं।

हम गंभीर बीमारियों की चुनौतियों से लड़ पाए हैं। लेकिन, कुछ न कुछ आपदा या संकट आ ही जाते हैं। अब किसको पता था कि कोरोना जैसी आपदा आ जाएगी। दुनिया में कौन सोच सकता था कि ऑक्सीजन की कमी भी हो सकती है।

मन-मस्तिष्क से आप कल्पना कर सकते हैं कि ऑक्सीजन की कमी से भी लोग मरे थे, लेकिन प्रकृति है।हमारे पास सामूहिक ताकत थी। धीरे-धीरे सामूहिक रूप से काम करने की कार्य पद्धति बनी। कुछ चिकित्सा सुविधाओं का भी विस्तार हुआ। कुछ चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार कोरोना के बाद हुआ। हमने चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार को चुनौतीपूर्ण लड़कर काफी हद तक बढ़ाया है।

हमारा देश बहुत बड़ा है, फिर भी हम उन विकसित देशों के मुकाबले कोरोना जैसी चुनौतियों से लड़ पाए, क्योंकि हमारे पास सामूहिक ताकत थी और सामूहिक रूप से कार्य करने की संस्कृति थी। हमने दूसरों के दु:ख,

अभाव और पीड़ा को अपना दु:ख और पीड़ा समझा । जो जिससे बन सका, उसने उस तरह से अपना योगदान दिया। सरकारों ने भी अपना किया। सोसाइटीज ने, संस्थाओं ने, व्यक्तियों ने और बच्चों ने भी अपना काम किया।

जो जिससे बन सकता था, उन सबने मिलकर काम किया, तभी हम उस चुनौती से, उस आपदा से और उस संकट से लड़ पाए। हम पोलियो मुक्त भारत बन गए हैं। वर्ष 2025 तक टीबी मुक्त बनने का हमारा संकल्प है।

लेकिन, हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती कैंसर की है। इस कैंसर की चुनौतियों से भी हमें लड़ना पड़ेगा। कैंसर की चुनौतियों से लड़ने के लिए हमें सामूहिकता से काम करना होगा, क्योंकि अभी भी दूर-दराज के गाँव में शिक्षा के अभाव के कारण और बीमारी की जानकारी के अभाव के कारण लोगों को बीमारी के बारे में पता नहीं चलता है।

कई बार बीमारी का पता चल जाता है, लेकिन धन का अभाव होता है। गांव में आदमी चुपचाप बैठा रहता है और सोचता है कि ठीक है, भगवान ने यही लिखा है।

अगर मैं पैसा बीमारी के लिए लगा दूंगा तो मेरे बेटे-बेटियों का क्या होगा। यह पिता सोच लेता है, मां सोच लेती है। मां में ज्यादा संवेदना होती है।

बीमारी होने के बाद भी वह कहती है कि अब हमारी उम्र हो चुकी है और हम सारा धन इसमें खर्च कर देंगे तो बेटे-बेटियों का क्या होगा। जब बेटे-बेटियों को कैंसर हो जाता है तो जीवन का कमाया हुआ सारा संचय तथा कर्ज लेकर भी इलाज कराता है।

इसलिए कोठारी साहब ने बीड़ा उठाया है। जो गरीब लोग हैं, उनका नि:शुल्क इलाज कराया, लेकिन उनकी भी एक सामर्थ्य है। अब समाज साथ है। हम मिलकर लड़ेंगे, साथ मिलकर लड़ेंगे।

राजस्थान के हर गांव के अंदर चिकित्सा की जांच हो, कैंसर की जांच हो, ऐसी कार्य योजना बनाएंगे। अभी एक मोबाइल वैन है, दूसरी आ रही, फिर समाज से और मांगेंगे तथा समाज के आगे झोली फैलाएंगे, लेकिन हर व्यक्ति कैंसर से मुक्त हो, क्योंकि जब कैंसर का जो पेशेंट आता है तो वह थर्ड और फोर्थ स्टेज पर आता है।

उस समय उसका इलाज कराना बहुत मुश्किल होता है। अगर कैंसर का प्रारम्भिक जांच में पता चल जाए तो हम इलाज करके उसको बेहतरीन कर सकते हैं। इसलिए कैंसर की प्रारम्भिक जांच हो और प्रारम्भिक जांच होने के बाद उसका इलाज हो। अगर इलाज में कहीं धन का अभाव है तो हम बैठे हैं, समाज बैठा है।

कोठारी साहब, आप चिंता न करें, हम मिलकर करेंगे, लेकिन कोई भी व्यक्ति धन के अभाव में कैंसर से न मरे, यह हमारी जिम्मेदारी है। ऐसा कोई भी व्यक्ति आपको मिलता है कि गरीब व्यक्ति है, धन का अभाव है और वह कैंसर का इलाज नहीं करवा पा रहा है तो हमारे पास भेजें, हम उसका इलाज करवाएंगे, लेकिन धन के अभाव में, कर्ज में डूबकर कोई व्यक्ति इलाज करवाए, यह हमारी मानवीय संवेदना के लिए उचित नहीं है।

इसके साथ-साथ हमें कहीं न कहीं कैंसर की रोकथाम के बारे में भी विचार करना होगा। एक बहुत लंबा समय था, जब केवल बीमारी होने के बाद हम इलाज करवाने के लिए धन खर्च करते थे, लेकिन अब समय आ गया है,

जब हमें यह जानना है कि बीमारी होने के क्या कारण हैं, किस कारण से बीमारी हुई है। जैसे अभी संजय कोठारी जी बता रहे थे कि एक जिले के अंदर अन्य जिले के मुकाबले में जांच में एवरेज में कैंसर की संख्या ज्यादा है।

हमें ऐसे इलाके चिन्हित करने पड़ेंगे, ऐसे ब्लैक स्पॉट चिन्हित करने पड़ेंगे। उन ब्लैक स्पॉट को चिन्हित करने के बाद रिसर्च करनी पड़ेगी कि आखिर इस इलाके में कैंसर होने के क्या कारण है।

देश और दुनिया में जो बेहतर रिसर्च हो रही है, उस पर बात करनी पड़ेगी कि इस इलाके में जाकर लोगों के नमूने लें कि किस-किस कारण से कैंसर के क्या-क्या कारण हैं और उन कारणों को दूर करने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं, ताकि हम कैंसर रोकने के उपायों के लिए भी काम करें और कैंसर के बाद उसके इलाज के लिए भी काम करें। हमें दोनों पहलुओं पर काम करना होगा। इसलिए मेरा विचार है कि इस पर आप कभी दिल्ली आएं, जो देश-दुनिया के कैंसर होने के कारण के बारे में बढ़िया रिसर्च करने वाले हैं, उनसे हम चर्चा करेंगे और उन क्षेत्रों के अंदर भेजेंगे तथा जानकारी प्राप्त करेंगे।

कैंसर के क्या-क्या कारण हैं? हम कुछ मूल कारण जानते हैं, लेकिन उसके बाद भी कई नए-नए कारण कैंसर के आ रहे हैं। हमें कई लोग ऐसे भी मिलते हैं, जो न तो स्मोकिंग करते हैं, न बीड़ी पीते है, न सिगरेट पीते हैं, न शराब का सेवन करते हैं। सात्विक जीवन जीने के बाद भी कई बच्चों में और कई बड़े लोगों में मैंने कैंसर देखा है।

आखिर कैंसर होने के कारणों पर बहुत रिसर्च हो रही हैं। अभी तक हम कैंसर के इलाज में ठीक होने के काफी हद तक पहुंच गए हैं, लेकिन

अभी भी कैंसर का पूर्णतया इलाज हो, उस लेवल तक हम नहीं पहुंचे हैं। इसके लिए दुनिया रिसर्च कर रही है। भारत भी रिसर्च कर रहा है।

एक दिन आएगा, जब हम कैंसर की बीमारी को मूल जड़ से समाप्त करेंगे। वह समय भी आएगा। यह हमारा आत्मविश्वास है। हमारी साइंस, हमारे नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, उनके इनोवेशन, उनकी रिसर्च संस्थाओं पर हमें भरोसा है कि हम इन कैंसर की बीमारियों को जड़ से समाप्त कर पाएंगे।

इसके लिए हमें समाज को जागृत करना पड़ेगा। समाज को जानकारी देनी पड़ेगी। इसमें सम्पूर्ण सोसायटी के योगदान की आवश्यकता है।

अभी तक कैंसर होने के जो कारण हैं, उनकी जानकारी हम समाज को दें और कैंसर के जो नए-नए कारण हो रहे हैं, उनकी जानकारी भी समाज को दें। हम सबसे पहले कैंसर की बीमारी होने के कारणों को जानकर उनको रोकने के लिए समाज को जागृत करें।

दूसरा, कैंसर होने के बाद हम व्यापक जांच अभियान चलाएं और उस व्यापक जांच अभियान के अंदर हम फर्स्ट स्टेज पर कैंसर की जानकारी प्राप्त कर लेंगे तो हम बेहतर केयर कर पाएंगे। इसलिए हमें समाज को जागृत करना पड़ेगा।

मुझे कई बार लगता है कि जैसे मैंने कोरोना के समय देखा कि 10-10, 15-15 गांवों को एक आशा सहयोगिनी और आंगनवाड़ी की कार्यकर्ता संभाल रही थीं। वहां न ऑक्सीमीटर था, न थर्मामीटर था, न बीपी के इंस्ट्रूमेंट्स थे।

मैं दंग रह गया था, जब मैं रातभर लोगों से बात करता था। वे कहते थे साहब, बैठे-बैठे कई लोग चले गए। मैंने पूछा कि ऑक्सीमीटर था, उन्होंने कहा कि नहीं था। मुझे रात को नींद नहीं आई। मैंने दिल्ली के बाजारों में से जितने ऑक्सीमीटर्स मिल सकते थे, उनको दो-दो, तीन-तीन सभी गांवों में भिजवाए। जितनी भी दवाइयां होती थीं, उनके लिए मैंने एक-एक गांव में कार्यकर्ताओं को कहा कि 10-10, 20-20 दवाइयों के पैकेट रखिए तथा जिसकी ऑक्सीजन कम होने लगे, उसे दीजिए। यह मैंने नहीं किया, बल्कि सभी ने किया। यह सबके प्रयासों से ही हुआ।

आखिर अभी भी मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है। मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर के अंदर जो गंभीर बीमारियां हैं, उनकी जांच के लिए अभी भी बहुत कमी है। इसलिए यह मोबाइल वैन जांच का एक अच्छा प्रयास है। कोटा-बूंदी के अंदर भी यह जांच की मोबाइल वैन गई थी।

कई लोग डर के कारण जांच नहीं करवा रहे थे। विशेष रूप से गरीब व्यक्ति कहता था कि अगर मैंने जांच करवा ली और कैंसर निकल गया तो मेरे पास इलाज करवाने के पैसे नहीं है और मैं इलाज कैसे कराऊंगा। आप देखिए, उसकी क्या हालत थी कि अगर उसके कैंसर निकल भी गया तो उसके पास इतने पैसे नहीं कि इलाज करवा पाए इसलिए वह जांच भी नहीं करवा रहा। यह भाव अभी तक लोगों में है।

अपनी आने वाली पीढ़ियों का संरक्षण करने के लिए वे ऐसा करते हैं कि पीढ़ी बची रहे, बच्चे पलते रहे, क्योंकि वे सोचते हैं कि अब हमारी उम्र हो गई। जब गांवों में नौजवान गए तो बुजुर्ग लोगों ने तो मना ही कर दिया कि अब जिंदगी पूरी हो गई, अब क्या जांच कराए। अभी निकल जाएगा तो बेटा-

बेटी मानेंगे नहीं और इलाज में सारे पैसे खर्च कर देंगे। जो कमाया है, उससे भी बर्बाद हो जाएंगे, फिर उन बेचारों की जिंदगी कैसे चलेगी? इसलिए मैं इन सब कैंसर विजेताओं को बधाई देता हूँ।

आपका उत्साह, आपका आत्मविश्वास, आपका चुनौतीपूर्ण संघर्ष और आपकी जीवन की कहानियों से उन सबको भी प्रेरणा मिलेगी, जिनके कुछ न कुछ गंभीर बीमारी है। क्योंकि मन-मस्तिष्क का चुनौतियों से लड़ना, आत्मविश्वास होना, चुनौतियों से संघर्ष करने की आंतरिक चेतना, शक्ति जाग्रत होना, ये इतिहास पढ़ने से या जिनके ऊपर ये सब गुजरी हैं, उनकी कहानियों से भी प्रेरणा मिलती है।

आपके जीवन से आपके उत्साह को देख कर, जैसे श्रीमती जोशी जी को देख रहा था, दिव्यांग व्यक्ति, मदनलाल जी को देखा, बच्चों को देखा, उनके चेहरों पर अभी भी उत्साह था, जैसे कोई बीमारी नहीं हुई है। यह उत्साह बीमारी होने से पहले और उसके बाद भी, उनमें चुनौतियों से लड़ने की सामर्थ्य और शक्ति थी। इसीलिए ऐसे कार्यक्रमों से प्रेरणा मिलेगी और निश्चित रूप से हम इस कैंसर जैसी गंभीर बीमारी पर विजय प्राप्त करेंगे। हर गरीब से गरीब व्यक्ति का इलाज हो, हम इसके लिए सुनिश्चित व्यवस्था करेंगे।

मुझे आशा है कि हम सभी के सामूहिक प्रयासों से गांव में जांच भी कराएं और कोई गंभीर बीमारी हो, जिसके इलाज के लिए धन का अभाव हो, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार ने कई चिकित्साओं की अच्छी योजनाएं चला रखी हैं, फिर भी कोई भी परेशानी हो, मिल कर सहयोग करेंगे।

मुख्यमंत्री सहायता कोष और प्रधानमंत्री सहायता कोष एवं कई एनजीओज हैं। सुनीता गहलोत जी भी चिंता कर रही हैं। उन्होंने इस दर्द को देखा है।

हम सभी मिल कर काम करेंगे और सामूहिकता के साथ काम करेंगे, तो निश्चित रूप से बेहतरीन इलाज करा पाएंगे, हर व्यक्ति को स्वस्थ रख पाएंगे। हर चेहरे पर मुस्कान रहे, खुशी रहे, यही हमारा अंतिम संकल्प है।

मैं पुन: भगवान महावीर कैंसर सोसायटी के सभी ट्रस्टियों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, जो समर्पण और सेवा भाव से इस संस्था को चला रहे हैं, इसका विस्तार कर रहे हैं। भगवान करें कि हम कैंसर का विस्तार होने से रोक दे और कैंसर बीमारी न हो, यह भगवान से प्रार्थना करते हैं।